समापन

समापन

कविवर नागार्जुन रचित सफल खंडकाव्य "भूमिजा" का अनुशिलन करने के पश्चात हम यह कह सकते है की, कवि ने यह खंडकाव्य कुछ विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर ही लिखा है। "भूमिजा" काव्य के वे कुछ विशिष्ट पक्ष हैं, जो उसे मौलिकता तो देते ही हैं, उसे एक आधुनिक कृति भी बनाते है। इतिहास तथा पुराणों के घटना प्रसंगों, चरित्रों तथा आशयों को ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर नागार्जुन ने एक परंपरावादी कवि की भूमिका नहीं निभाई, आधुनिक युग के एक सार्थक कवि के नाते उन्होंने उन्हे नए अर्थो से सम्पन्न करके प्रस्तुत किया है।

झूठी मर्यादा को तोड़ना और राजधर्म को लोकधर्म में बदलना यही महत् उद्देश्य "भूमिजा" खंडकाव्य में कवि नागार्जुनजी ने आज के बदलते परिवेश को सामने रखकर रखा है। "भूमिजा" की नायिका सीता अपने जुडवाँ बच्चों को शिक्षा-दीक्षा देकर उन्हें संस्कारक्षम इसीलिए बनाती है की वे इस परंपरा को तोड सके। साथ ही जिस रघुकुल रीति-नीति तथा प्रीति की बात अथवा रामराज्य के आदर्श की बात होती आयी है, वह सीता के त्याग, तपस्या एवं साधना के समक्ष फीका है।

सीता द्वारा नये युग की संकल्पना कवि की खास आधुनिक बोधपरक है। एक ऐसा परिवर्तन युग आएगा जब आडंबर, प्रवाद और झूठी प्रतिष्ठा को कहीं जगह नहीं मिलेगी। सभी को न्याय सुलभ मिलेगा। हर कोई स्वतः अनुशासनबध्द रहेगा। राजा अफवाहों पर ध्यान न देंगे। नर-नारी के लिए मर्यादा, न्याय-विद्या, बुध्दि, विवेक समान होंगे। सही जाँच-पडताल के बाद किसी को दोषी सिध्द

किया जा सकेगा। घर-घर में खुशहाली समृध्दि फैलेगी लेकिन पहले तो जन-मन में ज्ञान का दिपक चाहिए तभी तो यह संभव हो सकेगा।

कवि नागार्जुन ने "रामायण" जैसे पौराणिक आख्यान को नये दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया है। कवि ने "भूमिजा" में बताया है कि सीता द्वारा धरती माता में समा जाना उस राम की शोषण प्रिय राजनीति से मुक्ति का चरमोत्कर्ष है, जिसे राम के एकपक्षीय न्याय के संदर्भ में देखा जा सकता है। आज के युग में भी कोई भी शासक-पति अपनी पत्नी के चरित्र पर ऐसा बिना सोचे विचार तथा सही जाँच पडताल किये बिना दोषी ठहरायेगा तो वह नारी अपने स्वाभिमान की, आत्मगौरव की रक्षा करना खूब जानेगी। सीता ने अपने स्वाभिमान तथा आत्मगौरव की रक्षा के लिए खुद को धरती माता के हवाले किया और सदा के लिए विख्यात हो गयी।

नागार्जुन ने "भूमिजा" में एक परंपरावादी कवि की भूमिका नहीं निभाई है। प्रत्येक जागरूक कवि पुरानी परंपरा के जीवित-सप्राण अंशो को, अपने युग के अनुरूप नई शक्ल देता है - तभी कोई परंपरा सार्थक परंपरा बन पाती है। इसके अभाव में परम्परा एक शव के समान है, और नागार्जुन जीवंत परंपरा के दावेदार कवि है उसके शव का बोझा ठोनेवाला कवि नहीं।

प्रबंध के अंत में जाते-जाते मैं यही कहूँगा कि नागार्जुन के "भूमिजा" के मुल्यांकन की यह एक बहुत संक्षिप्त रेखाकृति है, जिसे मैंने आपके समक्ष रखने का प्रयास किया है। बहुत संपन्न और बहुत सार्थक है नागार्जुन का काव्य-कृतित्व। सरलता तथा सादगी में कवि, व्यक्तित्त्व की ही भाँति अद्वितीय है। अलंकारो के घटाटोप के बीच यह सादगी ही कितना बड़ा अलंकार है, इसे सच्चे काव्य रसिक ही समझ सकते हैं।

सचमुच, "भूमिजा" खंडकाव्य अपनी समस्त पौराणिक आधार-भूमि के रहते हुए एक प्रगतिशील, समाजचेता आधुनिक कवि की कृति कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकी है।

संदर्भ - ग्रंथ - सूची

संदर्भ - ग्रंथ - सूची

उपजीव्य ग्रंथ

1· खिचडी विप्लव देखा हमने।
2· तालाब की मछलियाँ।
3· तुमने कहा था।
4· रूपांबरा।
5· सतरंगे पंखोवाली।

संदर्भ - ग्रंथ :-

1·	डॉ·कमलेशकुमार	-	काव्य परंपरा और नई कविता की भूमिका प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली प्र·सं·1994
2·	डॉ·खरे गणेश	-	आधुनिक काव्य प्रवृत्तियाँ एक पूनर्मुल्यांकन पुस्तक संस्थान, कानपुर प्र·सं·1976·
3·	गुप्त बाबूराम	-	उपन्यासकार नागार्जुन प्र·सं·1985
4·	डॉ·गुप्त गणपतिचंद्र	-	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास द्वितीय खंड, लोकभारती प्रकाशन

5· सं·त्यागी सुरेशचंद्र - नागार्जुन
प्र·सं·1984

6· दिविक रमेश - नये कवियों के काव्यशिल्प सिध्दांत
पराग प्रकाशन कर्णगली, विश्वासनगर,
शाहदरा दिल्ली,
प्र·सं·1967

7· डॉ·पैठणकर सुभद्रा - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य युगीन संदर्भ
विद्याविहार कानपुर, प्र·सं·1988

8· डॉ·भट्ट प्रकाशचंद्र - नागार्जुन जीवन और साहित्य
प्र·सं·1974

9· मानव विश्वंभर - नयी कविता नये कवि
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
द्वि·स·1968

10· मानव विश्वंभरनाथ - हिन्दी साहित्य का सर्वेक्षण
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्र·सं·1979

11· डॉ·मिश्र रामदरश - हिन्दी कविता के तीन दशक
ज्ञानभारती प्रकाशन, दिल्ली
प्र·सं·1969

12· डॉ·मिश्र भगीरथ - काव्यशास्त्र
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
221 001
एकादश संस्करण 1994

13· डॉ·मिश्र सरजूप्रसाद - आधुनिक हिन्दी कविता में व्यक्तित्त्व
अंकन
पुस्तक संस्थान, कानपुर
प्र·सं·1977

14·	डॉ·शर्मा रामविलास	-	लहर नवंबर 70
15·	डॉ·शर्मा शिवकुमार	-	हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली 6 तेरहवाँ संस्करण 1992
16·	शकुल ललित	-	नया काव्य नये मूल्य दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि· दिल्ली, प्र·सं·1975
17·	डॉ·सक्सेना द्वारिकाप्रसाद	=	हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधी कवि विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा· अष्टम सं·1990
18·	सेठिया मूलचंद	-	कविता के आसपास श्याम प्रकाशन, फिल्म कालोनी,जयपुर प्र·सं·1992
19·	डॉ·सिंहल बैजनाथ	-	नयी कविता का इतिहास संगम प्रकाशन, दिल्ली प्र·सं·1977
20·	सायगल शशि	-	नयी कविता में मूल्य-बोध अभिनव प्रकाशन, दिल्ली प्र·सं·1976